भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1941

उत्तर देने की तारीख-17/12/2025

एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की कमी

1941 **श्री एस. सेल्वागनबेथी:**
डा. मेधा विश्राम कुलकर्णी:
श्रीमती रमिलाबेन बेचारभाई बारा:
श्री सत पाल शर्मा:
श्री कणाद पुरकायस्थ:

क्या ***शिक्षा*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की कमी से अवगत है;
(ख) शैक्षणिक सत्र प्रारंभ होने से पहले सभी छात्रों के लिए एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की समय से उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं या प्रस्तावित हैं;
(ग) पूरे भारत में एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए क्या तंत्र मौजूद है; और
(घ) क्या पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण, आपूर्ति और स्कूलों तक वितरण पर नज़र रखने के लिए कोई निगरानी तंत्र स्थापित किया गया है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री जयन्त चौधरी)

(क) से (घ): राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने और उनका मुद्रण, कागजों की खरीद एवं वितरण संबंधी विभिन्न चरणों के माध्यम से शैक्षणिक कार्यक्रम के अनुसार पूरे देश में पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता को

सुनिश्चित करता है। एनसीईआरटी की पुस्तकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

i. **अग्रिम मांग पूर्वानुमान:** एनसीईआरटी, मांग संबंधी अग्रिम अनुमान हेतु केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) और राज्य शिक्षा विभाग/बोर्ड से डेटा एकत्रित करता है। पूर्वानुमान को अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए, विद्यार्थी नामांकन को आधार बनाया गया है।

ii. **कॉपीराइट अनुमति प्रदान करना:** अच्छी गुणवत्ता की सामग्री आसानी से उपलब्ध हों, इसके लिए एनसीईआरटी ने विभिन्न राज्य सरकार की एजेंसियों को कॉपीराइट की अनुमति प्रदान की है और उनकी पाठ्यपुस्तकों को बनाने और मुद्रित करने के लिए तकनीकी और शैक्षणिक सहायता भी प्रदान करता है।

iii. **निर्बाध उत्पादन और वितरण:** स्टोरेज क्षमता और वितरण नेटवर्क जैसे उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करके, सभी शीर्षकों की प्रत्येक समय पर उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए, मुद्रण आदेश को चरणों में विभाजित किया जाता है ताकि सतत आपूर्ति बनी रहे और कम से कम विलंब हो।

iv. **मुद्रकों को पैनल सूची में शामिल करना और उच्च गुणवत्ता मानक:** मुद्रण में गति लाने और गुणवत्ता मानकों को अनुरक्षित करने हेतु, एनसीईआरटी ने मुद्रकों के पैनल के लिए पात्रता को बढ़ा दिया है, जिसके लिए नवीनतम मशीनरी की आवश्यकता है।

v. **डिजिटल उपलब्धता:** एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक पीडीएफ और दूसरे फॉर्मेट में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा) प्लेटफॉर्म, एनसीईआरटी वेबसाइट और ई-पाठशाला ऐप पर डिजिटल रूप में निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं, जिससे डिजिटल संस्करण तक सर्वसुलभ पहुँच सुनिश्चित होती है।

vi. **वितरण हेतु विक्रेताओं का पैनल बनाना:** एनसीईआरटी संबंधी प्रकाशनों के वितरण का अनुभव और क्षमता रखने वाले विशिष्ट पुस्तक विक्रेताओं को एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें वितरित करने के लिए भारत के अलग-अलग भागों से विक्रेता (बुकशॉप) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। एनसीईआरटी की पुस्तकों की बिक्री में लगभग 570 विक्रेता लगे हुए हैं।

vii. **एनसीईआरटी वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन बिक्री:** एनसीईआरटी देश के सभी भागों में इंडिया पोस्ट के सभी पिन कोड पर घर पर डिलीवरी भी प्रदान करता है।

एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें क्रय करने हेतु इच्छुक विद्यार्थी और अन्य लोग एनसीईआरटी वेब पोर्टल के माध्यम से क्रय संबंधी आदेश दे सकते हैं।

viii. **ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ गठजोड़:** एनसीईआरटी ने तेज़ और अधिक वितरण तथा अनधिकृत बिक्री पर रोक लगाने के लिए अमेज़न जैसे बड़े ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ भागीदारी की है। ये प्लेटफॉर्म दूर-दराज और अल्पसेवित क्षेत्रों में विशिष्ट आपूर्ति शृंखला प्रणाली के तौर पर कार्य करते हैं।

एनसीईआरटी का लक्ष्य शैक्षणिक सत्र आरंभ होने से पहले पाठ्यपुस्तकों संबंधी वितरण कार्य पूरा करना है। यह लक्ष्य चरणबद्ध वितरण के माध्यम से पूरा किया जाता है, जिसमें दूर-दराज़ और पिछड़े इलाकों को प्राथमिकता दी जाती है। हाल के वर्षों में, एनसीईआरटी द्वारा लगभग 5 करोड़ पाठ्यपुस्तकें मुद्रित की गई हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए, सतत आधार पर लगभग 15 करोड़ पाठ्यपुस्तकें मुद्रित करने का निर्णय लिया गया है। एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की बढ़ती मांग को अच्छे से पूरा करने के लिए, एक बहुमुखी तरीका अपनाया जा रहा है, जिसमें क्षमता वृद्धि, प्रौद्योगिकी एकीकरण, कार्यनीतिक सहभागिता, नीतिगत सुधार और फ़ीडबैक-आधारित योजना पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। इसमें पाठ्यपुस्तकों की बढ़ती मांग को अच्छे से पूरा करने के लिए स्टोरेज संबंधी सुविधा बढ़ाना और मुद्रण क्षमताओं में वृद्धि शामिल है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और प्राइवेट लॉजिस्टिक्स प्रोवाइडर्स के साथ कार्यनीतिक भागीदारी की जाती है ताकि अंतिम सुपुर्दगी आसानी से हो सके, और देश के प्रत्येक स्थान पर विलंब रहित पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। इस पहल का उद्देश्य मांग को मानकीकृत करना, योजना की सटीकता में वृद्धि, और पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता में क्षेत्रीय अंतर को समाप्त करना है। इस कार्यनीति का मुख्य आधार फीडबैक आधारित योजना पद्धति है, जिसमें स्कूलों, अभिभावकों और विक्रेताओं से सतत फीडबैक लिया जाता है। यह कीमती इनपुट भविष्य की योजना और वितरण कार्यनीति को बेहतर बनाने में मदद करता है, जिससे वे अंतिम उपभोक्ता की आवश्यकताओं के अनुसार अधिक अनुक्रियाशील बनते हैं। कुल मिलाकर, इन उपायों का उद्देश्य एक मज़बूत, प्रभावी आपूर्ति शृंखला बनाना है, जो पूरे देश में एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की समय पर निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

एनसीईआरटी ने एक मज़बूत निगरानी तंत्र कार्यान्वित किया है, जिसमें एक ऑनलाइन इन्वेंट्री मैनेजमेंट सिस्टम (एक वेब पोर्टल के माध्यम से) शामिल है, जो सभी क्षेत्रीय केन्द्रों, कार्यनीतिक वितरण केंद्रों और मुख्यालयों में मुद्रण की स्थिति, स्टॉक लेवल और वितरण का पता लगाने के लिए एक केंद्रीयकृत सुविधा देता है, जिससे प्रभावी इन्वेंट्री प्रबंधन और सोच-समझकर निर्णय लेना सुनिश्चित होता है। यह प्रेषित माल की वास्तविक समय की निगरानी

भी करता है, जिससे आपूर्ति शृंखला में पारदर्शिता और विश्वसनीयता में वृद्धि होती है। इस उद्देश्य हेतु एनसीईआरटी ने एक विशिष्ट पोर्टल (wwwncertbooks.ncert@gov.in) बनाया है और उसका अनुरक्षण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, एनसीईआरटी इस विशिष्ट वेब पोर्टल के माध्यम से स्कूलों, विक्रेताओं और विद्यार्थियों सहित सभी हितधारकों के साथ निरंतर रूप से संवाद करता रहता है। यह प्लेटफॉर्म एक मज़बूत फीडबैक प्रणाली और समय-समय पर समीक्षा की सुविधा प्रदान करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि देश के किसी भी भाग में एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों की कमी से जुड़ी कोई भी जानकारी या शिकायत तुरंत दूर की जाए, जिससे सभी के लिए निर्बाध और समय पर उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

****